IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 11, Issue 2, March 2024

Impact Factor: 7.394

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 2, March 2024 ||

शीर्षक & कोटा राज्य की कोटरियात/कोटड़ियों का ऐतिहासिक महत्व

नाम - नवनीत स्वरूप (असिस्टेंट प्रोफेसर)

विषय - इतिहास

महाविद्यालय - मां भारती पी.जी. कॉलेज कोटा, राजस्थान

सारांश

भारतीय इतिहास में राजस्थान का इतिहास स्वर्णिम अक्षरों से वर्णित व उल्लेखित हैं। राजपुताने का इतिहास प्राचीन भारतीय सभ्यताओं के कालखण्ड से ही प्राप्त होता है, पाषाणकालीन, हड़प्पा सभ्यता से सम्बधित कालीबंगा जैसी अतिप्राचीन सभ्यता के प्रमाण राजपुताने से खोजे गये। प्रचीनकाल के पश्चात महान संघर्ष काल मध्यकालीन भारत के इतिहास में भी राजस्थान की एतिहासिक भूमिका का महान इतिहासकारों द्वारा उल्लेख किया गया तथा आधुनिक इतिहासकारों द्वारा शोध किये गये। मध्यकालीन राजस्थान मुख्य रूप से 19 रियासतों के राजवंशो तथा भारतीय इतिहास में उनके योगदान का इतिहास है, उन्ही में से एक रियासात कोटा राज्य की 8 कोटरियात का इतिहास है। था। राजा इन सामन्तों के सहयोग से ही राज्य की स्थापना व इसकी सीमा में विस्तार करने में सक्षम हुआ था। सामन्त गण अपने को राजा के अधीन नहीं बल्कि उसका सहयोगी समझते थे। उनका राजा के साथ बन्धुत्व एवं रक्त का सम्बंध था, स्वामी और सेवक का नहीं।

बीज शब्द - कालखण्ड, बापजी, काकाजी, सामन्तप्रथा, कोटडी/कोटरियात

प्रस्तावना

पौराणिक साहित्य मे चर्मण्यवती (चम्बल) का उल्लेख मिलता है। पौराणिक उल्लेख के अनुसार ययाति के बड़े पुत्र यदु को चर्मण्यवती (चम्बल) बेत्रावती (बेतवा) एवं शक्तिमती (केन) द्वारा सिंचित भू-भाग दिया गया था जबकि अन्य पुत्र द्रुध्य को यमुना का पश्चिमी एवं चम्बल का उत्तरी क्षेत्र दिया गया था। रामायण काल में कोटा क्षेत्र मध्य भारत में विदिशा का एक भाग था। इस क्षेत्र में बौद्ध प्रभाव भी रहा है। झालावाड़ जिले मे डग क्षेत्र के कौलवी में हीनयान सम्प्रदाय की 100 बौद्ध गुफाओं का समूह है। मालवों और मौखरियों का भी इस क्षेत्र पर प्रभाव रहा है। प्राचीनता की दृष्टि से अभी तक यहाँ गंगधार (शिलालेख जो चैथी शताब्दी से इस क्षेत्र मे वैष्णव व शाक्त धर्म की विद्यमानता सिद्व करता है) में आर्य सभ्यता के प्रमाण मिले है तो केशवरायपाटन मे कुषाण काल के, अन्ता के पास बड़वा से 295 वि0 संवत के मौखरी वंश के यूप अभिलेख मिले है। जो इस क्षेत्र में 2 वैदिक यज्ञों के प्रचलन को सिद्ध करते हैं। कोटा जिले के दरा में भीमचैरी के शिव मन्दिर एवं कैथून के पास चारचैमा का शिवमंदिर गुप्तकालीन वास्तु शिल्प को दर्शाते है।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान में विद्यमान सरदारों या ठाकुरों के वंशज व उनके निवास के महल व कोटियो से उस समय की कला व स्थापत्य की जानकारियों का विश्लेषण कर समाज व विद्यार्थियों के समक्ष रियासत के अतीत की अच्छे ढ़ंग से व्याख्या की जा सकती है।

मुख्य सार

1631 ई. से पूर्व तक कोटा का अस्तित्व बून्दी की जागीर के रूप में रहा। 1631 ई. में राव माधोसिंह के नेतृत्व में कोटा के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना हुई।1631 ई. से 1648 ई. तक राव माधोसिंह का शासन रहा। राज्य की स्थापना के साथ ही सामन्तों का अस्तित्व आरम्भ हो गया था। राजा इन सामन्तों के सहयोग से ही राज्य की स्थापना व इसकी सीमा में विस्तार करने में सक्षम हुआ था। सामन्त गण अपने को राजा के अधीन नहीं बल्कि उसका सहयोगी समझते थे। उनका राजा के साथ बन्धुत्व एवं रक्त का सम्बंध था, स्वामी और सेवक का नहीं। शासक और सामन्तों के बीच भाई-बन्धु के इस सम्बंध के कारण ही शासक की स्थिति 'बराबर वालों में प्रथम' के समान थी। सामन्त घरेलू और राजनीतिक मामलों में सामाजिक समानता का दावा करते थे। यद्यपि अन्य कुलों के राजपूतों को उनकी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए जागीरें दी जाती थी तथापि राज्य के महत्वपूर्ण एंव विश्वसनीय पदों पर सामान्यतः स्वकुलीय सामन्तों को ही नियुक्त किया जाता था। एक ही कुल के सदस्य होने के कारण तथा स्वामी धर्म के सिद्वान्त से उत्पे्ररित होकर वे राजा की सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। युद्व के समय सामन्त राजा की सहायता करते थे क्योंकि उनमें यह भावना निहित थी कि वे अपनी पैतृक सम्पत्ति की सामूहिक रूप से रक्षा करने हेतु ऐसा कर रहे हैं। राजा की ओर से अपने भाई-बेटों को जीवनयापन हेतु भूमि दे दी जाती थी जो उनकी वंशानुगत जागीर के रूप में बनी रहती थी। राजा अपने सामन्तों को 'भाई जी' और 'काकाजी' आदि आदरसूचक शब्दों से सम्बोधित करते थे। इसी प्रकार सामन्त भी राजा को 'बापजी' कहकर सम्बोधित करते थे क्योंकि राजा उनके वंश का मुखिया था और वह कुल का प्रतिनिधित्व करता था।

भौगोलिक अवस्थिति राजस्थान के वर्तमान हाडौति क्षैत्र के कोटा सम्भाग मे स्थित कोटा, बाराँ तथा बूंदी जिला में स्थित प्रमुख कोटा राज्य के प्रमुख आठ सरदारों की कोटरियां है। कोटा राज्य के इतिहास अध्ययन में कोटरियात के विषय में ज्यादातर जानकारी का अभाव है परन्त सकारात्मकता यह है कि इनसे सम्बन्धि साक्ष्य वर्तमान में भी प्राप्त होते है जिन पर शोध किया जा सकता है और कोटा रियासत की एतिहासिकता से राष्ट्र व समाज को जागरूक व गोरवान्वित किया जाए कोटा राज्य के सरदारों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता हैं। एक राजवी और एक अमीर उमराव। राजवी कोटा नरेश के नजदीक के कुटुम्बी हैं। ठिकाना कोटरा, बमोलिया, सांगोद, आमली, खेरली, अन्ता तथा मुंडली के जागीरदार किशोरसिंहघोत घराने के हैं। इनसे दूसरे दर्जे में मोहनसिंघोत घराना हैं जिसके मुखिया पलायता के ठाकुर हैं। इन सभी को आपजी कहा जाता है। इन्हीं घरानों से राज्य गद्दी के लिये गोद जाने की प्रथा है। कोटा राज्य के ताजीमी सरदार एवं जागीरदार 36 हैं। इनमें अधिक संख्या हाड़ा चैहानों की है। कोटा में 8 जागीरें हाड़ा वंश को ऐसी थी जिन्हें कोटिडियात कहते हैं। ये जागीरें - 1. इन्द्रगढ़ 2. बलवन 3. खातोली 4. गेंता 5. करवर 6. पीपलदा 7. फसूद 8. अन्ता ये जागीरें

कोटा राज्य को 14 हजार 3 सौ 67 रु. 13 आना खिराज के रूप में देती थी। ये कोटिड़ियां पहले बंदी राज्य के मातहत थी। इनका सूबा रणथम्बोर लगता था। राजा सुर्जन हाड़ा ने जब रणथम्बोर का किला सन् 1569 में अकबर को दे दिया तो मुगल शासकों ने इन कोटडियों से खिराज लेना प्रारम्भ कर दिया। ई.स. 1760 में रणथम्बोर का किला जयपुर नरेश माधोसिंह के अधिकार में आ गया। जयपुर वालों ने मुगल परम्परा के अनुसार इन कोटडियों से खिराज मांगा। इन ठाकुरों ने कोटा महाराव से सहायता मांगी। ई.स. 1823 में कोटा के दीवान राजरणा के दीवान राजराणा जालिमसिंह झाला ने सरकार की सलाह से खिराज जयपुर वालों को स्वीकार किया पर यह खिराज कोटा राज्य द्वारा वसूल किया जाता था फिर कोटा राज्य द्वारा जयपुर को अदा किया जाता था जिससे इन कोटड़ियों पर कोटा राज्य का अधिपत्य बना रहे। इन्द्रगढ़ और खातोली के सिवाय अन्य कोटड़ियों से जब नये जागीरदार बनते थे तो नजराणा लिया जाता था तथा ये बिना महाराव के अनुमति किसी को गोद भी नहीं ले सकते थें। करवर, गेंता, फसूद और पीपलदा हरदावतों की कोटड़ियां कहलाती हैं। 1649 में बादशाह शाहजहां ने बूंदी के राव राजा भोज के बेटे हृदयनारयण के

एक बेटे खुशहालसिंह को फसूद का परगना दिया था। खुशहालसिंह ने उसके चार भाग कर करवर तो अपने पास रखा गेंता अपने चचेरे भाई अमरसिंह को दिया, फसूद गजसिंह को और पीपलदा दौलतसिंह को दिया था। पीपलदा का खास कस्बा चारीोें के सझे में रहा जा आज तक उसी तरह चला आ रहा है। कोटड़ियों के अलावा 24 जरगीरदार ताजीमी है।–

इन्द्रगढ- महाराज इन्द्रसाल ने सवंत 1662 माघ बदि 8 को बसाया था। इन्द्रगढ में 62 गांव जागीर के है।

बलवन- यहां के सरदार महाराज प्रतापसिंह बूंदी के स्वर्गीय महाराजकुमार गोपीनाथ के पुत्र बैरीशाल के वंशज है। इस जागीर में 21 गांव हैं।

खातोली- इन्द्रगढ़ के महाराज गजसिंह के दुसरे पुत्र अमरसिंह ने दौलतखां से 1673 में खातोली छीन ली।और अपना ठिकाना स्थापित किया था। यह पार्वती नदी के किनारे स्थित है जो पीपलदा तहसील में पड़ता है। इस ठिकाने में 39 गांव है जिनमें म.प्र. के 7 गांव भी आते थे जो उस समय शिवपुर के राजा से इनकों प्राप्त हुए थे। 1990 में जन्में भवानी सिंह तथा उनके वंशज इस ठिकाने के स्वामी हुए।

हरदावत कोटड़िया- इन जागीरों के स्वामी बूंदी के हाड़ा हृदयनारण के बंशज है इस कारण ही इसी हरदावतों की कोटडि कहा जाता है।

गेंता- यह महाराज तेज सिंह के अधिकार में 8 गांव की जागीर है। जो पैतृक सम्पति है।अमरसिंह को यह भाग कुशलसिंह ने 1649 में दिया था। 7 गांव कोटा दरबार से दिये हुए है। इस तरह कुल 15 गांव इनकी जागीर में है। यहां के स्वामी कोटा दरबार को 13 घोडों की चाकरी देते थे।

फसूद- ठाकुर जगतसिंह का जन्म 1905 हुआ था इनकी जागीर में 6 गांव आते थे। जगतसिंह ठाकुर जयसिंह के गोद आये थे।

पीपलदा- इस जागीर के स्वामी ठाकुर गुलाबसिंह थें। इनके 11 गांवों की सालाना आय 22000 हजार रु. थी। ठाकुर भरतसिंह जी का युवावस्था मे ही देहान्त हो गया था इसलिए ठाकुर गुलाबसिंह जो इनके नजदीकी कुटुम्बियों मे से थे को कोटा राज द्वारा ठिकाने का ठाकुर बनाया गया।

आंतरदा- आंतरदा की जागीर में अन्तरदा तथा 6 गांव है। जिनकी आय 15000 रु सालाना थी। ठाकुर बहादुर सिंह जी बूंदी के गोपीनाथ जी के पौत्र के वंशज है।

निमोला- यह इन्इ्रगढ़ ठिकाने से निकला हुआ है। महाराज रणजीतसिंह इन्द्रसिहोत खाँप के होने की वजह से इन्द्रगढ को 720 रु खिराज का देते थे।

कोयला- कोटा राज्य के प्रथम नरेश राव मधोसिंह हाड़ा के चैथे पुत्र कनीराम ने स्थापित किया था उपरोक्त कोटडियों के वंशज वर्तमान समय भी मोजूद है तथा इनके ठिकानो का इतिहास शोध योग्य है जहां से कोटा राज्य के इतिहास की और अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है, जैसा की बताया गया है की कोटड़िया के स्वामी हाड़ा राजाओं के नजदीकी कुटुम्बियों से ही निकले थे जिनकी जानकारी का स्रोत कोटा के कैथून कस्बे में निवास करने वाले हाड़ा वंश के जागा से प्राप्त की जा सकती है।

शोध का महत्व –

राजस्थान के इतिहास में राजाओं के साथ-साथ प्रत्येक वर्ग भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए फिर वो एक छोटा सा योद्धा ही क्यो ना हो कोटा राज्य के सरदारों में कोटडियों के सरदारों की भूमिका भी इसी रूप में महत्वपूर्ण रही है क्योंकी सघर्ष काल के समय में यही सरदार राजा का युद्धकाल में जी जान से साथ दिया करते थे कोटरियों के सरदारों को जो जागीरें प्राप्त होती थी उनके बदले वो दरबार को सैनिक सहायता दिया करते थे। कोटरियों के सरदार या ठाकुरों द्वारा कई विद्वानों व कलाकरों को संरक्षण भी दिया गया था जिससे उनके काल की संस्कृति व कला की जानकरी प्राप्त की जा सकती है जो इस शोध के माध्यम से प्रकास में लायी जा सकती है। वर्तमान में विद्यमान सरदारों या ठाकुरों के वंशज व उनके निवास के महल व कोटियो से उस समय की कला व स्थापत्य की जानकारियों का विश्लेषण कर समाज व विद्यार्थियों के समक्ष रियासत के अतीत की अच्छे ढंग से व्याख्या की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची -

डाॅ मथुरालाल शर्मा -कोटा राज्य का इतिहास भाग प्रथम पृ.सं. 94-97
डाॅजगत नारायण शर्मा - महाराव उम्मेदसिं द्वितीय
जगदीश सिंह गहलोत - राजपूताने का इतिहास पृ.सं. 110-120
कर्नल जेम्सटाॅड - एनल्स एण्ड एण्टीक्यूटीज आॅफ राजस्थान जिल्द 2 पृ- 550-555
आर.पी. शास्त्री - झाला जालिम सिंह पृ.स. - 235
गोपीनाथ शर्मा - सोशल लाइफ इन मिडाइवल लाइफ इन राजस्थान
डाॅ. आर. पी. व्यास - आधुनिक राजस्थान का वृहद् इतिहास पृ.सं. 311-12
पी. सरन स्टडीज इज मिडाइवल इण्डियन हिस्ट्री में प्रकाशित लेख द फ्यूडल सिस्टम आॅफ राजपूताना , पृ. 3-21

IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 7.394

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com